नाट्यम्

95-98

शूद्रक विशेषांक

प्रधान संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक
सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल
नौनिहाल गौतम, रामहेत गौतम
शशिकुमार सिंह, किरण आर्या

प्रकाशक
नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर (म.प्र.)

नाट्यम् **95-98, अक्टूबर 2020-सितम्बर 2021**
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका
महाकवि शूद्रक विशेषांक
ISSN : 2229-5550
UGC Care List Journal, S.N.70
नाट्य परिषद् **(पंजीकरण क्र. 100066)**
संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-297149

सदस्यता शुल्क :
विशेषांक - 200/- रु.
प्रत्येक अंक - 100/- रु., वार्षिक - 400/- रु.
पांच वर्षीय सदस्यता व्यक्तिगत - 2500/- रु.
पांच वर्षीय सदस्यता (संस्थागत) - 5000/- रु.
इस अंक का मूल्य - 200/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com
natyamsagar1982@gmail.com
07582297149 Mob : +919425656284
© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, **अमन प्रकाशन** नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति के लिए *नाट्य परिषद्* से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से *नाट्य परिषद्*, संपादक या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादकीय

हमारे लिए विशेष हर्ष का विषय है कि नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग की त्रैमासिक शोधपत्रिका 'नाट्यम' को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के द्वारा नामित पत्रिकाओं की सूची में शामिल कर लिया गया है। एतदर्थ उस समिति के सभी महानुभावों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

'नाट्यम' त्रैमासिक शोध पत्रिका के पिछले विशेषांकों की श्रृंखला में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में यह अंक शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्' पर केंद्रित है। इस महान् नाट्यकृति की महत्ता सर्वमान्य है। सुप्रसिद्ध नाटककार और रंगमंच के ज्ञाता हबीब तनवीर ने 'मिट्टी की गाड़ी' शीर्षक से जो नाटक लिखा था वह बहुचर्चित हुआ और यह नाटक मृच्छकटिक से प्रेरित है। उन्होंने पूरी तरह से लोक रंगमंच की पारम्परिक शैली और तकनीक का प्रयोग किया है। इस पर संस्कृत के विद्वानों ने काफी एतराज किया क्योंकि मूल नाटक को क्लासिकी शैली में मंचित किया जाना चाहिए था।

शूद्रक का मृच्छकटिक अपने युग का ही नहीं, वरन् हमारे समय और समाज की भी यथार्थ-कथा है। यह हमारे समय का सच प्रतीत होता है। इसमें स्त्री, न्याय-व्यवस्था, समाजिक जीवन, शासन व्यवस्था, राजनीतिक यथार्थ, सामंती युग की विडंबनाएं, प्रेम आदि का बहुत यथार्थसम्मत चित्रण किया गया है। यहाँ प्रकृति जीवन की सहचरी भर नहीं है, अपितु जीवन-दर्शन है, प्रेरणा शक्ति है, ऊर्जा का अखंड स्रोत है।

शूद्रक का पांडित्य भी अनुपमेय है। उसकी बहुज्ञता और नाट्य-कौशल का कोई सानी नहीं है। विविध ज्ञान की आभा से वेष्ठित मृच्छकटिक शैल्पिक सौंदर्य की दृष्टि से भी अद्वितीय कृति है। शूद्रक की भाषाई चेतना, अलंकार और छंद विधान, बिंब रचना आदि भी अनूठापन लिये हुए है। मृच्छकटिक की भाषा में पाठक को चमत्कृत करने की अपूर्व क्षमता से युक्त है।

इस अंक में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, बजरंग बिहारी तिवारी, चेतना वेदी, मैत्रेयी कुमारी आदि विद्वानों के आलेख इस अंक की विशेष उपलब्धि हैं। अन्य विद्वानों और शोधार्थियों ने परिश्रमपूर्वक मृच्छकटिक के विभिन्न पक्षों पर अपने शोध लेख लिखकर इस पत्रिका का गौरव बढ़ाया है। सभी लेखकों को हार्दिक

धन्यवाद और हमारी यह उम्मीद कायम है कि आगामी अंकों में भी लेखकों का रचनात्मक सहयोग मिलता रहेगा। 'नाट्यम' पत्रिका इस अंक से 'ई' पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है, यही विश्वविद्यालय का निर्देश/आदेश है। इसके बावजूद हमारी दिली इच्छा है कि 'नाट्यम' प्रिंट रूप में भी पूर्ववत् छपती रहे, किंतु यह प्रयास आप सभी लेखकों के सहयोग से ही संभव हो सकेगा। अतः संस्कृत भाषा और साहित्य के उत्थान के लिए समर्पित लेखकों, अध्यापकों और शोधार्थियों से विनम्र अनुरोध है कि वह आगामी अंकों में आर्थिक सहयोग देकर हमारा उत्साहवर्धन अवश्य करें ताकि 'नाट्यम' की यह प्रकाशन यात्रा सुचारू रूप से गतिमान रहे। हमारे विश्वास को आपका संबल सतत रूप से मिलता रहे। यह हमारी कामना है। आशा है कि नाट्यम का लेखक परिवार बढ़ेगा और हमारी इस प्रकाशन/संपादन योजना में हमारा सहचर बनेगा। नाट्यम सिर्फ एक पत्रिका नहीं है वरन् हमारी गौरवमयी धरोहर है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के द्वारा संस्थापित यह पत्रिका नाटकों पर केंद्रित देश की प्रमुख पत्रिकाओं में शुमार की जाती है। प्रो. त्रिपाठी के संकल्प को हम सभी पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, ऐसा विश्वास हमने अर्जित किया है।

संस्कृत विभाग के सभी शिक्षकों के अनथक सहयोग और परिश्रम से नाट्यम का शूद्रक विरचित मृच्छकटिक पर केंद्रित अंक आप सभी विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सुखानुभूति हो रही है। प्रबंध संपादक डॉ. संजय कुमार की लगन और सक्रियता सराहनीय है। लेखकों से संपर्क करना और उनसे आलेख प्राप्त करने में वे सर्वथा दक्ष हैं। संपादक मंडल के शिक्षक साथी नौनिहाल गौतम, शशिकुमार सिंह, किरण आर्या और रामहेत गौतम की तत्परता और सहयोग प्रशंसनीय है।

आप सभी सुधीजनों की प्रतिक्रिया/सुझाव की अपेक्षा के साथ।

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

अनुक्रम

1. महाकवि शूद्रक का पाण्डित्य — 7
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
2. मृच्छकटिक का घटनाश्लेष और रंगमंच — 18
राधावल्लभ त्रिपाठी
3. मृच्छकटिकम् : पुनर्विचार और परिवर्तन का दृष्टिवाही प्रकरण — 28
चेतना वेदी
4. साहित्य और न्यायतंत्र — 36
बजरंग बिहारी तिवारी
5. मृच्छकटिक में वर्णित समाज — 62
मैत्रेयीकुमारी
6. मृच्छकटिक में गणिका समाज : शास्त्रीय प्रतिबिम्ब — 69
समीनाज खान
7. मृच्छकटिक में स्त्री-जीवन — 81
तेजनाथ पौडेल
8. मृच्छकटिक में लोक-संस्कृति — 90
सञ्जय कुमार
9. मृच्छकटिक में सनातन धर्म-दर्शन — 100
सत्यप्रकाश दुबे
10. मृच्छकटिक में धार्मिक प्रवृत्तियाँ — 106
हेमन्त शर्मा
11. मृच्छकटिक में मूर्ति एवं वास्तुकला — 117
सुरेन्द्र कुमार यादव
12. मृच्छकटिक में आयुर्वेदीय सुभाषित — 126
गोपाललाल मीना
13. मृच्छकटिक में न्याय-व्यवस्था — 133
शशिकुमार सिंह
14. मृच्छकटिक में ज्ञान के विविध आयाम — 144
एस. एस. गौतम

15. मृच्छकटिक में नाटकीय तत्त्व — 153
रुबी

16. मृच्छकटिक की नाट्यशास्त्रीय समीक्षा — 160
जयप्रकाश नारायण

17. मृच्छकटिक में संवाद-योजना — 170
गौरव सिंह

18. मृच्छकटिक में प्राकृत-प्रयोग — 175
सन्दीप कुमार यादव

19. 'क' प्रत्ययप्रेमी कवि शूद्रक — 182
किरण आर्या

20. मृच्छकटिक में राजनैतिक परिदृश्य — 187
शान्तिलाल सालवी

21. मृच्छकटिक में अलङ्कार — 192
रामहेत गौतम

22. मृच्छकटिक का सूक्तिसौन्दर्य — 210
नौनिहाल गौतम

23. मृच्छकटिक में मानवमूल्य — 215
राजेन्द्र प्रसाद

24. मृच्छकटिक में विश्रान्त सूच्य कथांश — 222
ओमप्रकाश राजपाली

लेखक परिचय — 231

22

मृच्छकटिक का सूक्तिसौन्दर्य

नौनिहाल गौतम

साहित्य सरस रीति से उपदेश देकर समाज को कर्त्तव्य का बोध कराता है। साहित्यकार लोक में रहकर अनुभव अर्जित करते हैं। ये अनुभव भी उनके साहित्य में स्थान पा जाते हैं। कवियों के सद्विचार सूक्तियों के रूप में साहित्य में प्राप्त होते हैं। साहित्यिक दृष्टि से सूक्तियाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। महत्त्वपूर्ण अर्थ की सटीक प्रस्तुति की दृष्टि से सूक्तियों का महत्त्व सर्वातिशायी है। संस्कृत नाटकों में सूक्तियाँ बहुतायत में पायी जाती हैं। नाट्य साहित्य में विद्यमान सूक्तियों का महत्त्व द्रष्टव्य है - "संस्कृत नाटकों में भी सूक्तियों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। संवादों में पिरोयी गयी सूक्तियाँ प्रसंगानुसार तो अर्थ देती ही हैं, सामान्य रूप से प्रयोग करने पर भी सहृदयों को आनन्द देने वाली होती हैं। इनसे नाटकीयता में भी वृद्धि होती है। कम शब्दों में अधिक अर्थ देने वाली सूक्तियाँ नाट्य में चमत्कार को बढ़ाने वाली होती हैं।"[1] संस्कृत नाट्य परम्परा में मृच्छकटिकम् का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रकरण कोटि के इस रूपक के रचनाकार शूद्रक हैं। उन्होंने यत्र-तत्र सरल और प्रभावकारी सूक्तियों का सन्निवेश किया है। ये सूक्तियाँ विषय की दृष्टि से भी विविधता लिए हुए हैं। इन सूक्तियों को विभिन्न विषयों के आधार पर निम्नलिखित प्रकार से निरूपित किया जा रहा है।

दरिद्रता/निर्धनता- नायक चारुदत्त पूर्व में धनाढ्य रहा था किन्तु अत्यधिक दान देने के कारण निर्धन हो गया है। निर्धनता को व्यक्त करने के क्रम में तत्सम्बन्धी कई सूक्तियाँ आयी हैं। पुत्रहीन, मित्रहीन और मूर्ख के लिए तो कुछ अभाव होता है किन्तु दरिद्र व्यक्ति के लिए सब ओर अभाव ही अभाव रहता है-

"शुन्यमपुत्रस्य गृहं, चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।।"[2]

शूद्रक दरिद्रता को मरण से भी अधिक दुःखदायी मानते हैं क्योंकि दरिद्रता अनन्त दुःखों वाली होती है-"अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।"[3]

दुःखों के साथ ही सारी विपत्तियाँ भी दरिद्रता का आश्रय लिए रहती हैं। इस कारण निर्धन व्यक्ति दुःखों के साथ विपत्तियों से भी घिर जाता है- "अहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्।"[4] धर्मशास्त्रों के अनुसार पाँच महापातक बताये गये हैं। जिस प्रकार ये पाँच महापातक अनेक प्रकार के दुःख देने वाले हैं। उसी प्रकार दरिद्रता भी अत्यन्त दुःखदायी है। जिस प्रकार लोग पातकी से दूरी बना लेते हैं उसी प्रकार निर्धन से भी दूरी बना लेते हैं। इस कारण मानो यह छटवाँ महापातक है-"मन्ये निर्धनता प्रकाममपरं षष्ठं महापातकम्।"[5] लोक भी दरिद्र का साथ नहीं देता है। धन के विषय में प्रायः सभी निर्धन पर शंका करते हैं- "शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापा दरिद्रता।"[6] धनहीन हो जाने पर मित्रजन भी व्यक्ति के प्रति उदासीन होने लगते हैं- "नष्टधनाश्रयस्य सौहृदादपि जनाः शिथिली भवन्ति।"[7] दरिद्र व्यक्ति के मित्र भी मित्र नहीं रह जाते हैं साथ ही उसके चिरकाल से अनुरक्त लोग भी विरक्त होने लगते हैं-"यदा तु भाग्यक्षयपीडितां दशां नरः कृतान्तोपहितां प्रपद्यते। तदास्य मित्राण्यपि यान्त्यमित्रतां चिरानुरक्तोऽपि विरज्यते जनः।।"[8] निर्धन व्यक्ति स्वयं भी लज्जा का अनुभव करता है- "दारिद्र्याद्ध्रियमेति"[9] दरिद्रता में मनुष्य को पौरुष प्रदर्शन का अवसर नहीं मिल पाता है। "धिगस्तु खलु दारिद्र्यमनिवेदितपौरुषम्"[10] इस प्रकार दरिद्रता के विभिन्न पक्षों को उजागर करने वाली सूक्तियाँ इस रूपक में विद्यमान हैं।

स्त्री- मृच्छकटिक में स्त्री पात्रों का पर्याप्त चित्रण हुआ है। अन्य प्राणियों को वशीभूत करने के उपाय विद्यमान हैं किन्तु स्त्री हृदय से अनुरक्त होने पर ही वशीभूत हो पाती है-

"आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।
हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्।।"[11]

स्त्रियाँ स्वभाव से ही चतुर हुआ करती हैं जबकि पुरुष तो शास्त्रों के उपदेशों से ज्ञानी बन पाते हैं-

"स्त्रियो हि नाम निसर्गादिव पण्डिताः।

पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते।।"[12]

वेश्या- मृच्छकटिक की नायिका वसन्तसेना वेश्या है। इस कारण तत्संबंधी सूक्तियाँ इस रूपक में हैं। वेश्याओं को श्मशान के फूलों की तरह त्याज्य बताया गया है।

"वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः।"[13]

वे कभी पवित्र नहीं हो सकती हैं-

"न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति, न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति।

यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयो न वेशजाताः शुचयस्तथाङ्गनाः।।"[14]

गुण-भारतीय परंपरा में गुण सदैव स्वीकरणीय रहे हैं। गुणवान् मनुष्य के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं है इसलिए मनुष्यों को गुण प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए-

"गुणेषु यत्नः पुरुषेण कार्यो न किञ्चिदप्राप्यतमं गुणानाम्।

गुणप्रकर्षादुडुपेन शम्भोरलंघ्यमुल्लंघितमुत्तमाङ्गम्।।"[15]

किसी व्यक्ति में विद्यमान गुण ही उसमें अनुराग के हेतु बनते हैं- "गुणः खलु अनुरागस्य कारणं न पुनर्बलात्कारः।"[16]

दोष-अपने ही दोष के कारण व्यक्ति अन्य मनुष्यों पर शंका करता है- "स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कनीया मनुष्यः।"[17] रात्रि बहुत दोषों वाली होती है क्योंकि अधिकतर चोरी एवं अन्य अनर्थ रात्रि में ही हुआ करते हैं-"बहुदोषा हि शर्वरी।"[18] बुद्धिहीन व्यक्ति नष्ट हो जाता है- "निर्बुद्धिः क्षयमेति।"[19] असंयमित इन्द्रियाँ चोर हैं जो चिरसंचित धर्म रूपी संपत्ति को चुरा लेते हैं-

"विषमा इन्द्रिय चौरा हरन्ति चिरसञ्चितं धर्मम्।"[20]

भाग्य- नायक चारुदत्त भाग्य में विश्वास करता है। धन की लाभ हानि भाग्य के अधीन होती है-

"भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।"[21]

द्यूत- जुआ सुमेरु पर्वत के शिखर से गिरने के समान हानि (अर्श से फर्श पर) पहुँचाने वाला है-

"सुमेरुशिखरपतनसन्निभं द्यूतम्।"[22]

काम- विश्वस्त युगल में एकान्त स्थान में परस्पर काम का संचार होता है-

"विविक्तविस्रम्भरसो हि कामः।"[23]

संबंध- विपत्तियों में घिरने पर प्रिय करने वाले लोग दुर्लभ होते हैं। हिन्दी के 'सुख

के सब साथी, दुःख में न कोय' गीत का भाव इस में निहित है। संपन्न अवस्था में पराये भी बन्धु बन जाते हैं, जबकि विपत्ति में मित्र भी साथ छोड़ देते हैं-

''सर्वः खलु भवति लोके लोकः सुखसंस्थितानां चिन्तायुक्तः। विनिपतितानां नराणां प्रियकारी दुर्लभो भवति।। परोऽपि बन्धुः समसंस्थितस्य मित्रं न कश्चिद् विषमस्थितस्य।।''[24]

चरित्र- चरित्र की निरंतर रक्षा करना चाहिए क्योंकि धनवान् व्यक्ति भी चरित्रहीन होने पर दुर्गति को प्राप्त हो जाता है-

''चरित्रयेण विहीन आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति।''[25]

सरलता सर्वत्र सुशोभित होती है-

''सर्वत्रर्जवं शोभते।''[26] आगन्तुकों का सत्कार करना ही सज्जनों का धन होता है-

''सत्कारधनः खलु सज्जनः।''[27]

विश्वास- धरोहर व्यक्ति के विश्वास पर रखी जाती है, भवनों में नहीं-

''पुरुषेषु न्यासा निक्षिप्यन्ते न पुनर्गेहेषु।''[28]

नीति- नीति वाक्य इस रूपक में यत्र-तत्र विद्यमान हैं। कई पद्य सूक्ति रूप ही हैं। तेजहीन व्यक्ति लोक में तिरस्कार का पात्र बन जाता है-

''निस्तेजाः परिभूयते।''[29] जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार भार का वहन करता है, वह न तो गिरता है, न ही कठिन स्थिति में विनष्ट होता है, इसलिए व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना चाहिए-

''य आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं वहति मनुष्यः।
तस्य स्खलनं न जायते न च कान्तारगतो विपद्यते।।''[30]

बलवान् के साथ विरोध करना हितकर नहीं होता है-

''बलवता सह को विरोधः।''[31]

दुःख भोगने के बाद मिलने वाला सुख अधिक आनन्द देने वाला होता है- ''सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते।''[32] साहस में सम्पत्ति निवास करती है- ''साहसे श्रीः प्रतिवसति।''[33] रत्न का संयोग रत्न से ही होता है अर्थात् योग्य का मेल योग्य (अर्ह) से ही होता है- ''रत्नं रत्नेन सङ्गच्छते।''[34]

लोकोक्ति- लोकोक्तियाँ संवादों में पिरायी हुई हैं। हिन्दी की लोकोक्ति 'अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है' का स्रोत यह संस्कृत उक्ति प्रतीत होती है- ''स्वके गेहे कुक्कुरोऽपि तावच्चण्डो भवति।''[35] मृच्छकटिकम् की सूक्तियाँ दरिद्रता/

निर्धनता, स्त्री, वेश्या, प्रेम, गुण, दोष, भाग्य, द्यूत, काम, संबंध, चरित्र, नीति आदि विषयों पर केन्द्रित हैं। ये कथा के प्रसंगों में घुली-मिली होने पर भी अपनी विशिष्ट छाप छोड़ती हैं। इन सूक्तियों के भाव अन्यत्र विद्यमान सूक्तियों से मेल रखते हैं। इन सूक्तियों में सन्निहित भाव लोक में प्रचलित उक्तियों में देखे जा सकते हैं। सर्वाधिक सूक्तियाँ दरिद्रता या निर्धनता पर केन्द्रित हैं। सहृदयों के मन को आकर्षित करने वाली ये सूक्तियाँ मृच्छकटिक के सौन्दर्य को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

सन्दर्भ -

1. डॉ. नौनिहाल गौतम : मुद्राराक्षस का सुक्तिसौन्दर्य,नाट्यम् अंक 89-90, पृ. 134,

2. मृच्छकटिक, 1.8
3. वही, 1.11,
4. वही, 1.14
5. वही, 1.37
6.वही, 3.24
7. वही, 1.13
8. वही, 1.53
9. वही, 1.14
10. वही, 3.19
11. वही, 1.50
12. वही, 4.19
13. वही, 4.14
14. वही, 4.17
15. वही, 4.23
16. वही, 1.32 पश्चात्
17. वही, 4.2
18. वही, 1.58
19. वही, 1.14
20. वही, 8.1
21. वही, 1.13
22. वही, 2.6
23. वही, 8.30
24. वही, 10.15, 16
25. वही, 1.43
26. वही, 10.49 पश्चात्
27. वही, 2.15
28. वही, 1.56 पश्चात्
29. वही, 1.14
30. वही, 2.14
31. वही, 6.2
32. वही, 1.10
33. वही, 4.6 पूर्व
34. वही, 1, पृ. 53
35. वही, 1.43 पूर्व

23
मृच्छकटिक में मानवमूल्य

राजेन्द्र प्रसाद

सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को देखा जाए तो वह मूलतः मानवमूल्यों के आधार स्तम्भ की तरह स्थिति हैं। संस्कृत साहित्य में वैदिककाल से ही मानवमूल्य रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय की मान्यता रही है। पुरुषार्थ चतुष्टय के विस्तृत रूप में मानवमूल्य के अनेक स्वरूपों को देखा गया है, जिन्हें मनुस्मृतिकार ने धर्म के दश लक्षणों के रूप में कहते हैं -

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर् विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।[1]

इसी प्रकार महाभारत में ब्राह्मणों के लिए बताये गये द्वादश महाव्रतों को मानव मूल्यों के प्रकारों में परिगणित कर सकते हैं -

धर्म सत्यं च तपो दमश्च अमात्सर्य ह्रीस्तितिक्षानसूया।
दानं श्रुतं चैव धृतिः क्षमा च महाव्रता द्वादश ब्राह्मणस्य।।[2]

अर्थात् धर्म, सत्य, तप, इन्द्रियसंयम, डाह न करना, लज्जा, सहनशीलता, किसी के दोष न देखना, दान, शास्त्रज्ञान, धैर्य और क्षमा ये ब्राह्मणों के बारह महान् व्रत हैं। उसी परम्परा में प्राचीन से लेकर अर्वाचीन तक के प्रायः सभी आचार्यों, कवियों ने अपनी रचनाओं में मानवमूल्यों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्हीं कवियों में कवि शूद्रक का भी विशिष्ट स्थान है, उन्होंने अपने प्रकरण ग्रन्थ मृच्छकटिकम् में मानवमूल्यों की सुव्यवस्थित स्थापना की है। मृच्छकटिकम् को मानवमूल्य की दृष्टि से देखा जाये तो इस प्रकरण की नींव ही मानवमूल्य से निर्मित है, क्योंकि इस प्रकरण का नायक चारुदत्त अपने मानवमूल्य रूपी गुणों के कारण ही नगर की प्रतिष्ठित गणिका वसन्तसेना के प्रेम-पात्र बनते हैं। चारुदत्त के